P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-IV*December-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति का उनकी बुद्वि तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

अरविन्द
प्रवक्ता,
डी.आर.यू. विभाग,
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चड़ीगाँव,
पौड़ी गढ़वाल

सारांश

शैक्षिक निष्पत्ति छात्र के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, शैक्षिक निष्पत्ति के अभाव में छात्र की शिक्षा पूर्ण नहीं होती । शैक्षिक निष्पत्ति प्राप्ति के लिए दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत छात्र भरपूर प्रयास करते हैं। इन प्रयासों को बुद्धि तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर जैसे कारक प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। शिक्षक को शिक्षक प्रतिमान द्वारा छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति अर्जन में सहायता करनी होगी,जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गुणात्मक शिक्षा की दृष्टि से भी अत्यन्त आवश्यक हैं–

मुख्य शब्द :दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम,सामाजिक–आर्थिक स्तर शैक्षिक निष्पत्ति, बुद्धि,

प्रस्तावना

भारत जैसे विशाल देश में प्रत्येक क्षेत्र के समुचित विकास के लिए या यूँ कहें कि क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने के लिए, क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था हेतु अलग–अलग प्रकार की योजनाएँ है। शिक्षा ही वह साधन है जिसके माध्यम से व्यक्ति में निखार आता हैं, मानव के बौद्धिक विकास के लिए शिक्षा एक अनिवार्य प्रक्रिया है। आदिकाल से ही भारत का शिक्षा में गौरवशाली स्थान रहा है जिसकी नींव योग एवं आध्यात्मिकता पर आधारित रही है, जिसने समस्त विश्व को अपनी संस्कृति व सभ्यता से चकाचौंध किया है । आज उत्तराखण्ड नवोदित पर्वतीय राज्य हैं जिसकी शिक्षा व्यवस्था का ढॉचा अभी निमार्ण के दौर से गुजर रहा है यहा पर सरकार सभी को शिक्षा उपलब्ध कराने को भरसक प्रयास कर रही है किन्तु यहॉ की भौगौलिक परिस्थिति एवं रोजगार की कमी के कारण छात्र अपनी शिक्षा को बीच में ही छोडकर पलायन करने को विवश होते रहे है किन्तु जब इस समस्या की ओर शिक्षाविदो एवं नीति–नियताओं का ध्यान गया तो उन्होने इस समस्या से निपटने हेतु राज्य के शिक्षा से वंचित छात्रों के लिए खुले (दूरस्थ) माध्यमिक विद्यालयों की व्यवस्था की जिससे कि वे रोजगार करते हुए अपनी शिक्षा को पूर्ण कर सके। प्राचीन समय से ही भारत में शिक्षा को रोजगारपरक शिक्षा के रूप में रखा गया था जिससे प्रभावित होकर विश्व के कोने–कोने से विद्यार्थी यहा शिक्षा ग्रहण करने आते थे। भारत जैसे प्रजातान्त्रिक राष्ट्र का यह पुनीत कर्तव्य है कि वह श्रेष्ठ नागरिको के निमार्ण में अधिक से अधिक गुणवत्ता वादी शिक्षा प्रदान करने के दायित्व के निर्वहन में सकारात्मक भूमिका अदा करें भले ही उन बालकों के अभिभावक अपने बालको की श्रेष्ठ शिक्षा व्यवस्था व्यय करने की स्थिति में हो अथवा न हो। इस बात को ध्यान में रखते हुए बालको की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप उन्हें शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराने की आवश्यकता है।

अध्ययन की आवश्यकता

भारत में शिक्षा प्रणाली को तीन स्तरो प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर तथा उच्च स्तर में विभक्त किया गया है। वर्तमान समय में सभी स्तरों पर गुणवत्ता में गिरावट आयी है। इसके साथ ही प्रत्येक स्तर पर दोनो (दूरस्थ तथा परम्परागत) में शिक्षा की गुणवत्ता में अन्तर आया है । इसी तथ्य को ध्यान में रखकर अध्ययनकर्ता ने इस समस्या का चयन किया है।

अध्ययन की समस्या

माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति का उनकी बुद्धि तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन के उददेश्य

1. माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत उच्च बुद्धि स्तर तथा उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना करना।
2. माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत उच्च बुद्धि स्तर तथा निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना करना।
3. माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत निम्न बुद्धि स्तर तथा उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना करना।
4. माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत निम्न बुद्धि स्तर तथा निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ

1– माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत उच्च बुद्धि स्तर तथा उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर नही है।

2– माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत उच्च बुद्धि स्तर तथा निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर नही है।

3– माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत निम्न बुद्धि स्तर तथा उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर नही है।

4– माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत निम्न बुद्धि स्तर तथा निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर नही है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग कर पॉच दूरस्थ एवं पॉच परम्परागत शिक्षा माध्यम के विद्यालयो (खरादी, नौगांव, बडकोट, पुरोला, उत्तरकाशी) में से प्रत्येक विद्यालय से 30–30 विद्यार्थियों का चयन किया गया इस प्रकार कुल 300 न्यादर्श लिए गये है।

अनुसंधान उपकरण

शैक्षिक निष्पत्ति

शैक्षिक निष्पत्ति के मापन हेतु इण्टरमीडिएट बोर्ड परीक्षा में परम्परागत एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से छात्रों के औसत को उनके शैक्षिक निष्पत्ति के रूप में माना गया है।

बुद्धि

बुद्धि स्तर के मापने के लिए एस0एस0जलोटा द्वारा निर्मित सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

सामाजिक आर्थिक स्तर

सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी के लिए डा0 बीना शॉह द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय तकनीकी

शून्य परिकल्पना के परीक्षण हेतु मध्यमान,मानक विचलन एवं टी–परीक्षण मान का प्रयोग किया गया है।

आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सांख्यिकीय परिणाम सारणी 1,2,3,एवं 4, के अन्तर्गत प्रस्तुत किया गया है।

माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत उच्च बुद्धिस्तर एवं उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति के आंकड़ों का विवरण सारणी संख्या 01 में दिया जा रहा है।

सारणी संख्या 01

माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत उच्च बुद्धिस्तर एवं उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति के अन्तर की सार्थकता

.05 स्तर पर वांछित टी मूल्य त्र 1.98

(91 स्वतन्त्रांश के लिए)

अनुदेशन विधि	छात्र संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (Sd)	स्वतन्त्राश (df)	टी परीक्षण (t)
दूरस्थ शिक्षा माध्यम	50	200.9	22.17	91	2.85′
परम्परागत शिक्षा माध्यम	43	219.67	38.05		

.01 स्तर पर वांछित टी मूल्य त्र 2.63

(91 स्वतन्त्रांश के लिए)

प्राप्त टी मूल्य (2.85) .05 तथा .01 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 01 के परिणामो से विदित होता है कि परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत छात्रो का मध्यमान (M - 219-67) दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत छात्रो के मध्यमान (M- 200-9) से अधिक अंक प्राप्त किये है जिससे मे टी परीक्षण के मान (t -2.85)मे सार्थक अन्तर पाया गया । सांख्यिकीय आंकडो के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च बुद्धि स्तर तथा उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के परम्परागत छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति उसी स्तर के किन्तु दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति से श्रेष्ठ है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र जो उच्च बुद्धिस्तर एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित है, उनके लिये दूरस्थ शिक्षा माध्यम की अपेक्षा परम्परागत शिक्षा माध्यम की शिक्षा अधिक प्रभावशाली है।

माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत उच्च बुद्धिस्तर एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति के आंकड़ों का विवरण सारणी संख्या 02 में दिया जा रहा है।

सारणी संख्या 02

माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत उच्च बुद्धिस्तर एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति के अन्तर की सार्थकता

अनुदेशन विधि	छात्र संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (Sd)	स्वतन्त्राश (df)	टी परीक्षण (t)
दूरस्थ शिक्षा माध्यम	48	190.87	25.54	88	2.66′
परम्परागत शिक्षा माध्यम	42	209.69	38.97		

.05 स्तर पर वांछित टी मूल्य = 1.98
(88 स्वतन्त्रांश के लिए)
.01 स्तर पर वांछित टी मूल्य = 2.63
(88 स्वतन्त्रांश के लिए)
प्राप्त टी मूल्य (2.66) .05 तथा .01 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 02 के अवलोकन से यह पाया गया है कि माध्यमिक स्तर पर कि परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत छात्रो का मध्यमान (M-209.69) दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत छात्रो के मध्यमान (M-190.87) से अधिक है जिससे टी परीक्षण के मान (t-2.66) .05 तथा .01 दोनो स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया है।

साख्यिकीय आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च बुद्वि स्तर एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत छात्र दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत छात्रों की तुलना में अधिक प्रभावशाली है। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर एवं उच्च बुद्वि स्तर वाले माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए परम्परागत शिक्षा माध्यम दूरस्थ शिक्षा माध्यम की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ है।

माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत निम्न बुद्धिस्तर एवं उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति के आंकड़ों का विवरण सारणी संख्या 03 में दिया जा रहा है।

सारणी संख्या 03

माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत निम्न बुद्धिस्तर एवं उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति के अन्तर की सार्थकता

अनुदेशन विधि	छात्र संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (Sd)	स्वतन्त्राश (df)	टी परीक्षण (t)
दूरस्थ शिक्षा माध्यम	51	189.31	33.64	95	3.02′
परम्परागत शिक्षा माध्यम	46	212.04	39.73		

.05 स्तर पर वांछित टी मूल्य = 1.98
(95 स्वतन्त्रांश के लिए)
.01 स्तर पर वांछित टी मूल्य = 2.63
(95 स्वतन्त्रांश के लिए)
प्राप्त टी मूल्य (3.02) .05 तथा .01 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 03 के परिणामो से विदित होता है कि माध्यमिक स्तर परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत निम्न बुद्वि स्तर एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान (M- 212.04) दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत निम्न बुद्धिस्तर एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले छात्रो के शैक्षिक निष्पत्ति के मध्यमान (M- 189.31) से अधिक है। जिससे टी मूल्य के मान (t- 3.02) में .05 तथा .01 दोनो स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया है।

सांख्यिकीय आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि निम्न बुद्वि स्तर एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति से अधिक है। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि निम्न बुद्वि स्तर एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए दूरस्थ शिक्षा की अपेक्षा परम्परागत शिक्षा माध्यम अधिक श्रेष्ठ है।

माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत निम्न बुद्धिस्तर एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति के आंकड़ों का विवरण सारणी संख्या 04 में दिया जा रहा है।

सारणी संख्या 04

माध्यमिक स्तर पर दूरस्थ तथा परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत निम्न बुद्धिस्तर एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति के अन्तर की सार्थकता

अनुदेशन विधि	छात्र संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (Sd)	स्वतन्त्राश (df)	टी परीक्षण (t)
दूरस्थ शिक्षा माध्यम	52	182.55	32.69	95	2.72′
परम्परागत शिक्षा माध्यम	45	202.68	39.17		

.05 स्तर पर वांछित टी मूल्य = 1.98
(95 स्वतन्त्रांश के लिए)
.01 स्तर पर वांछित टी मूल्य = 2.63
(95 स्वतन्त्रांश के लिए)
प्राप्त टी मूल्य (3.02) .05 तथा .01 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 04 के सांख्यिकीय आंकडो के अवलोकलन से यह पाया गया है कि माध्यमिक स्तर पर परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत निम्न बुद्धिस्तर एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान (M- 202.68) दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत निम्न बुद्धिस्तर एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले छात्रो के मध्यमान (M- 182.55) से अधिक है जिससे टी मूल्य के मान (t- 2.72') मे .05 तथा .01 दोनो स्तरो पर सार्थक अन्तर पाया गया हैं।

सांख्यिकीय आंकडो के आधार पर कहा जा सकता है कि निम्न बुद्धिस्तर निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत छात्र–छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति से प्रभावशाली है। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निम्न बुद्धिस्तर एवं निम्न सामाजिक स्तर से सम्बन्धित छात्रों के लिये परम्परागत शिक्षा माध्याम अधिक श्रेष्ठ है।

निष्कर्ष

आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों का विवरण निम्न प्रकार है।

1. माध्यमिक स्तर पर परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत उच्च बुद्धिस्तर एवं उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले छात्रो ने शैक्षिक समस्याओं के समाधान के लिए विद्यालय वातावरण, पुस्तकालय, अध्यापकों के द्वारा दिये गये निर्देशो को अधिक आत्मसात कर दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत उच्च बुद्धिस्तर एवं उच्च सामाजिक – आर्थिक स्तर वाले छात्रो से अधिक शैक्षिक निष्पत्ति प्राप्त की है। जबकि दूरस्थ शिक्षा माध्यम के छात्रो को इस प्रकार के अवसर प्राप्त नही होते है।अर्थात उच्च बुद्धिस्तर एवं उच्च सामाजिक आर्थिक वाले छात्रो के लिये परम्परागत शिक्षा माध्यम दूरस्थ शिक्षा माध्यम की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत उच्च बुद्वि स्तर एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के अन्तःक्रिया परम्परागत शिक्षा माध्यम के छात्रो की प्रभावशीलता दूरस्थ शिक्षा माध्यम से शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति के सम्बन्ध मे प्रभावशाली है। उच्च बुद्धिस्तर के परम्परागत छात्र की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के बावजूद भी वे अध्यापक के अध्यापन से प्रभावित होते है। तथा उच्च बुद्धिस्तर होने की वजह से पढने मे रूचि लेते है जबकि दूरस्थ शिक्षा माध्यम के उच्च बुद्धिस्तर एवं निम्न सामाजिक – आर्थिक स्तर के छात्रो को यह अवसर प्राप्त नही होता है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निम्न बुद्धिस्तर एवं उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर पर अन्तःक्रिया के प्रभावशीलता को देखने से ज्ञात होता है कि परम्परागत शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अध्ययनरत छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति से अधिक प्रभावशाली है।उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर पर एवं निम्न बुद्धिस्तर के छात्रों को अधिक सुविधाए जैसे पुस्तकालय, वाचनालय, सांस्कृतिक कार्यक्रम, दैनिक मासिक , त्रिमासिक परीक्षाए, अतिरिक्त कक्षा छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति को बढाती है।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निम्न बुद्धिस्तर एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के परम्परागत माध्यम से छात्रो की शैक्षिक निष्पत्ति नियमित कक्षा शिक्षण, विद्यालयी वातावरण अध्यापक एवं छात्रो की अन्तःक्रिया, पुस्तकालय तथा अपने साथी छात्रो की अन्तःक्रिया से प्रभावित होकर दूरस्थ शिक्षा माध्यम से छात्रो जिन्हे इस प्रकार की सुविधाओ, पाठयवस्तु से सम्बन्धित समस्याओ को स्वयं हल करने मे असमर्थ छात्रों से अधिक शैक्षिक निष्पत्ति प्राप्त करते है।

उपसंहार

भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षा की बढ़ती मॉग के अनुसार देश के सभी शिक्षा संस्थानों का मुख्य उद्देश्य शिक्षण अधिगम में गुणात्मक वृद्धि करना हैं। किन्तु विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या की आवश्यकताओं को उपलब्ध शिक्षा संसाधन पूर्ण करने में असमर्थ हैं। इससे विद्यार्थियों की निष्पत्ति प्रभावित हो रही है। दूरस्थ शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति का स्तर परम्परागत शिक्षा माध्यम से अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति से निम्न पाया गया। दूरस्थ शिक्षा माध्यम की जो भी कमजोरियॉ है, वे सैद्धान्तिक न होकर व्यावहारिक हैं। इन व्यावहारिक कमियों को उपचारात्मक शिक्षण के द्वारा दूर किया जा सकता है। इस प्रकार दूरस्थ शिक्षा माध्यम को परम्परागत शिक्षा माध्यम की तरह प्रभावशाली बनाया जा सकता है। जो 21वीं सदी में शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन का वाहक होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एलैक्स मेरी शीलु, – भारतीय शिक्षा व्यवस्था का विकास समस्या एवं समाधान 2008 रजत प्रकाशन, नई दिल्ली 110002
2. कौल लोकेश,– शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, 2009 विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा0 लि0।
3. यादव सियाराम (1987–88) कास्ट एण्ड एकैडमिक परफोरमैन्स आफ करस्पोन्डेस एजुकेशन
4. लाल रमन विहारी एवं शर्मा कृष्ण कान्त,– भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, 2011 आर0लाल बुक डिपों मेरठ।
5. सिंह गया, उदयीमान,– भारतीय समाज में शिक्षक, 2013, आर0 लाल, बुक डिपों मेरठ।
6. सिंह जयप्रकाश (1989)–ए कम्प्रैटिव स्टैडी आफ एकैडमिक एचिवमैन्ट मोटिवेशन एण्ड एटिटयूँड आफ स्टूडेन्टस स्टडी थ्रू करेस्पोन्डेन्स एण्ड रेगूलर सिस्टम मेरठ।
7. हुसैन मुजतबा,– समाजशास्त्रीय विचार, 2010 ओरियंट ब्लैक स्वॉन।